

वर्ड स्मिथ

एक मजाक से हुई थी 'OK' की शुरुआत

'OK' सिर्फ दो अक्षरों का यह छोटा-सा शब्द आज पूरी दुनिया की साझा भाषा बन चुका है। चाहे आप किसी अनजान देश में हो या अलग भाषा बोलने वाले लोगों के बीच, 'OK' हर जगह समझा जाता है। इसकी शुरुआत जितनी साधारण दिखती है, उतनी ही दिलचस्प भी है। दरअसल, साल 1839 में अमेरिका के अखबारों में एक अनोखा ट्रेड चल रहा था। शब्दों को जानबूझकर गलत लिखना और उन्हें छोटा करके पेश करना इसी मजाकिया अंदाज में 'all correct' को 'oll korrekt' लिखा गया और इसका संक्षिप्त रूप बना 'O.K.'। धीरे-धीरे यह मजाक लोगों की जुबान पर चढ़ गया। फिर आया 1840 का अमेरिकी राष्ट्रपति चुनाव, जिसमें 'OK' को नई पहचान दी। उम्मीदवार मार्टिन वैन ब्यूरन के समर्थकों ने 'OK Club' बनाकर इसे प्रचार का नारा बना दिया—'We're OK!'। यही से यह शब्द आम लोगों के बीच लोकप्रिय हो गया। 'OK' की उत्पत्ति को लेकर कई और सिद्धांत सामने आए। कुछ लोगों ने इसे चॉकटों जनजाति के शब्द 'okeh' से जोड़ा। यहां तक कि अमेरिका के राष्ट्रपति वुड्रो विल्सन भी 'OK' की जगह 'okeh' लिखते थे। भाषा वैज्ञानिकों ने शोध के आधार पर यह साफ कर दिया कि 'OK' की असली जड़ें 'oll korrekt' से ही जुड़ी हैं। समय के साथ 'OK' ने भाषाओं की सीमाएं तोड़ दीं और आज यह सहमति, संतोष और सामान्य प्रतिक्रिया का प्रतीक बन गया है। मजाक से जन्मा यह शब्द अब वैश्विक संवाद का सबसे आसान माध्यम बन चुका है।



अमृत विचार

कैम्पस

आज का समय अवसरों, संभावनाओं और प्रतिस्पर्धा का समय है। बदलती तकनीक, वैश्वीकरण और नई आर्थिक संरचनाओं ने करियर के पारंपरिक ढांचे को पूरी तरह परिवर्तित कर दिया है। एक समय था जब डॉक्टर, इंजीनियर या सरकारी नौकरी को ही सफलता का पर्याय माना जाता था, लेकिन आज डेटा साइंस, आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस, डिजिटल मीडिया, डिजाइन, खेल, उद्यमिता और अनेक कौशल आधारित क्षेत्रों में भी उज्वल भविष्य के द्वार खुले हैं। यह विविधता जहां एक ओर युवाओं को नए अवसर प्रदान करती है, वहीं दूसरी ओर उनके सामने सही चुनाव की चुनौती भी खड़ी करती है।



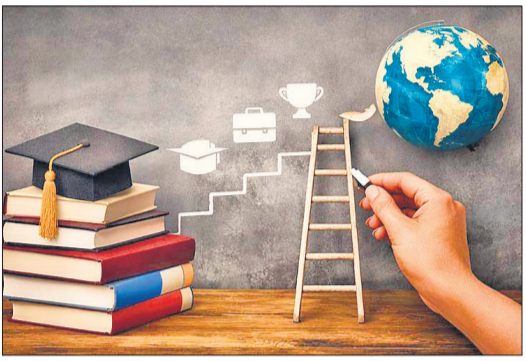
संघा राजपुरोहित शिक्षिका



नए युवा और बदलती करियर संभावनाएं

युवाओं के लिए अवसर और चुनौती

देश में उच्च शिक्षा प्राप्त करने वालों की संख्या लगातार बढ़ रही है, फिर भी बेरोजगारी के आंकड़ों में बड़ी हिस्सेदारी शिक्षित युवाओं की ही दिखाई देती है। लगभग 65 से 67 प्रतिशत बेरोजगार युवाओं का ग्रेजुएट होना इस तथ्य को स्पष्ट करता है कि केवल डिग्री हासिल करना सफलता की गारंटी नहीं है। इसका एक प्रमुख कारण यह है कि वर्तमान शिक्षा प्रणाली अभी भी अधिकतर सैद्धांतिक ज्ञान पर आधारित है, जबकि उद्योग और समाज को व्यावहारिक कौशल, नवाचार और समस्या समाधान की क्षमता रखने वाले युवाओं की आवश्यकता है। कौशल अंतर या 'स्किल गैप' भी इस समस्या का एक महत्वपूर्ण पक्ष है। देश में औपचारिक रूप से प्रशिक्षित युवाओं का प्रतिशत अभी भी बहुत कम है, जो लगभग 4 से 5 प्रतिशत के आसपास माना जाता है। वहीं, नई तकनीकी क्षेत्रों जैसे आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस, डेटा साइंस और डिजिटल तकनीक में कुशल युवाओं की मांग तेजी से बढ़ रही है, लेकिन उस अनुपात में प्रशिक्षित मानव संसाधन उपलब्ध नहीं है। यह अंतर युवाओं के लिए अवसर भी है और चुनौती भी, क्योंकि जो इस दिशा में स्वयं को तैयार करेगा, वही भविष्य में आगे बढ़ेगा।



रोजगार की गुणवत्ता

रोजगार की गुणवत्ता भी एक महत्वपूर्ण मुद्दा बनकर उभर रही है। बड़ी संख्या में युवा अपनी योग्यता से कम स्तर के कार्य करने के लिए मजबूर हैं, जिससे उनमें असंतोष और अस्थिरता की भावना बढ़ती है। यह स्थिति केवल आर्थिक नहीं, बल्कि मानसिक और सामाजिक स्तर पर भी प्रभाव डालती है। इन सभी तथ्यों और आंकड़ों के बीच सबसे महत्वपूर्ण प्रश्न यह है कि विद्यार्थी अपने करियर का चुनाव किस प्रकार करें। इसका उत्तर आत्म पहचान में निहित है। प्रत्येक विद्यार्थी की अपनी रुचियां, क्षमताएं और सपने होते हैं। जब कोई व्यक्ति अपनी रुचि के अनुरूप क्षेत्र का चयन करता है, तो वह उसमें अधिक समय तक टिकता है, बेहतर प्रदर्शन करता है और अंततः संतुष्टि भी प्राप्त करता है। इसके विपरीत, यदि करियर का चुनाव केवल सामाजिक दबाव, तुलना या अधूरी जानकारी के आधार पर किया जाता है, तो वह आगे चलकर असंतोष का कारण बनता है। सही निर्णय के लिए आवश्यक है कि विद्यार्थी अपने भीतर झांके, अपनी रुचियों और क्षमताओं को समझें और विभिन्न करियर विकल्पों के बारे में ठोस जानकारी प्राप्त करें।

रोजगार योग्य कौशल

भारत का वर्तमान जनसांख्यिकीय परिदृश्य इस चर्चा को और अधिक महत्वपूर्ण बना देता है। देश की लगभग 65 प्रतिशत आबादी 35 वर्ष से कम आयु की है और हर वर्ष लगभग 1.2 करोड़ युवा कार्यबल में प्रवेश करते हैं। यह स्थिति भारत को एक बड़ी संभावित शक्ति प्रदान करती है, जिसे "डेमोग्राफिक डिविडेंड" कहा जाता है। यदि इस युवा शक्ति को उचित दिशा, कौशल और अवसर नहीं मिले, तो यही संभावना एक चुनौती में परिवर्तित हो सकती है। यही वह बिंदु है, जहां कैरियर चयन और कौशल विकास के बीच का संबंध अत्यंत महत्वपूर्ण हो जाता है। विभिन्न रिपोर्ट्स यह संकेत करती हैं कि देश में रोजगार की समस्या से अधिक "रोजगार योग्य कौशल" की कमी एक बड़ी चुनौती है। आज भी लगभग आधे युवा ऐसे हैं, जो उद्योग की अपेक्षाओं के अनुरूप पूरी तरह तैयार नहीं हैं। कई अध्ययन बताते हैं कि केवल लगभग 50 प्रतिशत ग्रेजुएट ही वास्तव में जॉब-रेडी माने जाते हैं। इसका अर्थ यह है कि शिक्षा प्राप्त करने के बावजूद बड़ी संख्या में युवा रोजगार के लिए आवश्यक व्यावहारिक दक्षताओं से वंचित रह जाते हैं। यह स्थिति शिक्षा और रोजगार के बीच बढ़ती खाई को भी उजागर करती है।



रुचि, क्षमता और लक्ष्य

आज सूचना के अनेक स्रोत उपलब्ध हैं, लेकिन सही और प्रामाणिक जानकारी का चयन करना भी उतना ही आवश्यक है। इसके साथ ही शिक्षकों, अभिभावकों और कैरियर विशेषज्ञों से मार्गदर्शन लेना निर्णय को अधिक सुदृढ़ बनाता है। इस प्रक्रिया में परिवार और विद्यालय की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण होती है। माता-पिता को चाहिए कि वे बच्चों पर अपने सपनों का बोझ न डालें, बल्कि उनकी रुचियों और क्षमताओं को समझते हुए, उन्हें आगे बढ़ने के लिए प्रेरित करें। वहीं शिक्षकों को चाहिए कि वे केवल पाठ्यक्रम तक सीमित नहीं हों, बल्कि वे विद्यार्थियों के मार्गदर्शक बनकर उन्हें जीवन के महत्वपूर्ण निर्णय लेने के लिए तैयार करते हैं। एक सकारात्मक और सहयोगात्मक वातावरण बच्चों में आत्मविश्वास विकसित करता है और उन्हें सही दिशा में आगे बढ़ने की प्रेरणा देता है। आज का समय निरंतर सीखने का समय है। कैरियर अब एक स्थिर घिकल्प नहीं, बल्कि एक गतिशील यात्रा बन चुका है, जिसमें समय-समय पर नए कौशल सीखना, स्वयं को अपडेट करना और बदलती परिस्थितियों के अनुसार ढलना आवश्यक है। यही लचीलापन और सीखने की प्रवृत्ति व्यक्ति को दीर्घकालिक सफलता की ओर ले जाती है। अंततः यह स्पष्ट है कि कैरियर का सही चुनाव केवल एक निर्णय नहीं, बल्कि जीवन की दिशा तय करने वाली प्रक्रिया है। यह प्रक्रिया तभी सफल हो सकती है, जब उसमें आत्मविश्वास, सही जानकारी, कौशल विकास और स्पष्ट लक्ष्य का समन्वय हो। आज के विद्यार्थी यदि इन आधारों को समझकर अपने कैरियर की दिशा तय करते हैं, तो वे न केवल अपने लिए एक सफल भविष्य का निर्माण करेंगे, बल्कि समाज और राष्ट्र के विकास में भी महत्वपूर्ण योगदान देंगे। याद रखना होगा कि कैरियर का चुनाव भीड़ का अनुसरण नहीं, बल्कि अपनी पहचान को समझते हुए अपनी राह बनाने की प्रक्रिया है। सही कैरियर वही है, जहां रुचि, क्षमता और लक्ष्य एक साथ मिलकर जीवन को सार्थकता प्रदान करते हैं।

नोटिस बोर्ड

पीएचडी प्रवेश परीक्षा

लखनऊ विश्वविद्यालय ने शैक्षणिक सत्र 2025-26 के लिए पीएचडी (नियमित) कार्यक्रम में प्रवेश हेतु अनुसंधान प्रवेश परीक्षा की संभावित तिथि घोषित कर दी है। विश्वविद्यालय प्रशासन के अनुसार यह परीक्षा 30 और 31 मार्च को आयोजित की जाएगी। दोनों दिन यह परीक्षा सुबह 10:30 बजे से 12:00 बजे तक संचालित की जाएगी। विश्वविद्यालय ने अभ्यर्थियों को सलाह दी है कि वे समय से पहले परीक्षा केंद्र पर पहुंचें और प्रवेश पत्र सहित सभी आवश्यक दस्तावेज साथ रखें। परीक्षा से संबंधित अन्य जानकारी विश्वविद्यालय की आधिकारिक वेबसाइट पर उपलब्ध है।



परीक्षाओं का कार्यक्रम

महात्मा ज्योतिबा फुले रुहेलखंड विश्वविद्यालय, बरेली ने वर्ष 2026 के लिए बीएससी नर्सिंग, बीपीटी और बीएससी एमएलटी पाठ्यक्रमों की मुख्य एवं पूरक परीक्षाओं का कार्यक्रम जारी कर दिया है। विश्वविद्यालय प्रशासन के अनुसार ये परीक्षाएं 30 मार्च से शुरू होकर अप्रैल के प्रथम सप्ताह तक आयोजित की जाएंगी। परीक्षाओं के लिए एक समान समय निर्धारित किया गया है। परीक्षा सुबह 11 बजे से दोपहर 2 बजे तक होगी।



कॉलेज का पहला दिन

मेरे जीवन के अनुभवों में कॉलेज में मेरा पहला दिन शामिल है, जिन्हें मैं हमेशा संजोकर रखना चाहूंगी। यह सिर्फ एक नए कॉलेज में प्रवेश नहीं था, बल्कि अपने सपनों की दिशा में पहला ठोस कदम भी था। पत्रकारिता की पढ़ाई शुरू करना मेरे लिए लंबे समय से एक सपना रहा था और जब वह दिन आया, तो मेरे मन में उत्साह, जिज्ञासा और हल्की-सी घबराहट एक साथ उमड़ रही थी।

सुबह जब मैं कॉलेज परिसर में पहुंची, तो हर चीज मुझे नई और अलग लग रही थी। चारों ओर अनजान चेहरे, नई-नई इमारतें और एक बिल्कुल अलग माहौल मानों मैं एक नई दुनिया में प्रवेश कर रही थी। दिल की धड़कनें थोड़ी तेज थीं, लेकिन भीतर कहीं एक खुशी नई थी कि अब मैं अपने लक्ष्य की ओर बढ़ रही हूँ। पहले दिन की शुरुआत परिचय सत्र से हुई। कक्षा में बैठते ही शिक्षकों ने बड़े सहज और प्रेरणादायक अंदाज में पत्रकारिता के महत्व को समझाना शुरू किया। उन्होंने बताया कि पत्रकारिता केवल खबरें लिखने या दिखाने का काम नहीं है, बल्कि यह समाज के प्रति जिम्मेदारी निभाने का एक सशक्त माध्यम है। एक सच्चा पत्रकार वही होता है, जो निष्पक्ष होकर सच को सामने लाए, लोगों की आवाज बने और समाज की समस्याओं को उजागर करे। उनकी बातें सुनकर मेरे भीतर इस पेशे के प्रति सम्मान और भी बढ़ गया। क्लास के दौरान मैं ध्यान से हर बात सुन रही थी, लेकिन साथ ही अपने आसपास बैठे छात्रों को देखकर थोड़ी झिझक भी महसूस हो रही थी। स्वयं एक-दूसरे से अनजान थे, फिर भी हर किसी के चेहरे पर कुछ नया सीखने की उत्सुकता साफ दिखाई दे रही थी। पहली क्लास खत्म होने के बाद धीरे-धीरे माहौल थोड़ा सहज होने लगा। मैंने हिम्मत जुटाकर अपने सहपाठियों से बातचीत शुरू की। शुरुआत में थोड़ी झिझक थी, लेकिन जल्द ही वह घुलने लगी। कुछ ही दिनों में मेरी कुछ

नए दोस्तों से अच्छी पहचान हो गई। उनसे बात करके ऐसा लगा जैसे हम पहले से ही एक-दूसरे को जानते हों। इस छोटी-सी पहल ने मेरे आत्मविश्वास को काफी बढ़ा दिया। दिन के अंत तक मेरी सारी घबराहट लगभग खत्म हो चुकी थी और उसकी जगह एक नई ऊर्जा ने ले ली थी। मुझे एहसास हुआ कि यह सफर न केवल सीखने का होगा, बल्कि खुद को समझने और निखारने का भी अवसर देगा। ज्ञानार्थी मीडिया कॉलेज का वह पहला दिन मेरे लिए सिर्फ शुरुआत नहीं, बल्कि एक नई पहचान की नींव था।

क्या कहें, कॉलेज परिसर में पहुंची, तो हर चीज मुझे नई और अलग लग रही थी। चारों ओर अनजान चेहरे, नई-नई इमारतें और एक बिल्कुल अलग माहौल मानों मैं एक नई दुनिया में प्रवेश कर रही थी। दिल की धड़कनें थोड़ी तेज थीं, लेकिन भीतर कहीं एक खुशी नई थी कि अब मैं अपने लक्ष्य की ओर बढ़ रही हूँ। पहले दिन की शुरुआत परिचय सत्र से हुई। कक्षा में बैठते ही शिक्षकों ने बड़े सहज और प्रेरणादायक अंदाज में पत्रकारिता के महत्व को समझाना शुरू किया। उन्होंने बताया कि पत्रकारिता केवल खबरें लिखने या दिखाने का काम नहीं है, बल्कि यह समाज के प्रति जिम्मेदारी निभाने का एक सशक्त माध्यम है। एक सच्चा पत्रकार वही होता है, जो निष्पक्ष होकर सच को सामने लाए, लोगों की आवाज बने और समाज की समस्याओं को उजागर करे। उनकी बातें सुनकर मेरे भीतर इस पेशे के प्रति सम्मान और भी बढ़ गया। क्लास के दौरान मैं ध्यान से हर बात सुन रही थी, लेकिन साथ ही अपने आसपास बैठे छात्रों को देखकर थोड़ी झिझक भी महसूस हो रही थी। स्वयं एक-दूसरे से अनजान थे, फिर भी हर किसी के चेहरे पर कुछ नया सीखने की उत्सुकता साफ दिखाई दे रही थी। पहली क्लास खत्म होने के बाद धीरे-धीरे माहौल थोड़ा सहज होने लगा। मैंने हिम्मत जुटाकर अपने सहपाठियों से बातचीत शुरू की। शुरुआत में थोड़ी झिझक थी, लेकिन जल्द ही वह घुलने लगी। कुछ ही दिनों में मेरी कुछ

नए दोस्तों से अच्छी पहचान हो गई। उनसे बात करके ऐसा लगा जैसे हम पहले से ही एक-दूसरे को जानते हों। इस छोटी-सी पहल ने मेरे आत्मविश्वास को काफी बढ़ा दिया। दिन के अंत तक मेरी सारी घबराहट लगभग खत्म हो चुकी थी और उसकी जगह एक नई ऊर्जा ने ले ली थी। मुझे एहसास हुआ कि यह सफर न केवल सीखने का होगा, बल्कि खुद को समझने और निखारने का भी अवसर देगा। ज्ञानार्थी मीडिया कॉलेज का वह पहला दिन मेरे लिए सिर्फ शुरुआत नहीं, बल्कि एक नई पहचान की नींव था।

क्या कहें, कॉलेज परिसर में पहुंची, तो हर चीज मुझे नई और अलग लग रही थी। चारों ओर अनजान चेहरे, नई-नई इमारतें और एक बिल्कुल अलग माहौल मानों मैं एक नई दुनिया में प्रवेश कर रही थी। दिल की धड़कनें थोड़ी तेज थीं, लेकिन भीतर कहीं एक खुशी नई थी कि अब मैं अपने लक्ष्य की ओर बढ़ रही हूँ। पहले दिन की शुरुआत परिचय सत्र से हुई। कक्षा में बैठते ही शिक्षकों ने बड़े सहज और प्रेरणादायक अंदाज में पत्रकारिता के महत्व को समझाना शुरू किया। उन्होंने बताया कि पत्रकारिता केवल खबरें लिखने या दिखाने का काम नहीं है, बल्कि यह समाज के प्रति जिम्मेदारी निभाने का एक सशक्त माध्यम है। एक सच्चा पत्रकार वही होता है, जो निष्पक्ष होकर सच को सामने लाए, लोगों की आवाज बने और समाज की समस्याओं को उजागर करे। उनकी बातें सुनकर मेरे भीतर इस पेशे के प्रति सम्मान और भी बढ़ गया। क्लास के दौरान मैं ध्यान से हर बात सुन रही थी, लेकिन साथ ही अपने आसपास बैठे छात्रों को देखकर थोड़ी झिझक भी महसूस हो रही थी। स्वयं एक-दूसरे से अनजान थे, फिर भी हर किसी के चेहरे पर कुछ नया सीखने की उत्सुकता साफ दिखाई दे रही थी। पहली क्लास खत्म होने के बाद धीरे-धीरे माहौल थोड़ा सहज होने लगा। मैंने हिम्मत जुटाकर अपने सहपाठियों से बातचीत शुरू की। शुरुआत में थोड़ी झिझक थी, लेकिन जल्द ही वह घुलने लगी। कुछ ही दिनों में मेरी कुछ



ज्ञानेंद्र कुमार दीक्षित असिस्टेंट प्रोफेसर, बीबीडी यूनिवर्सिटी, लखनऊ

जब सपना बना हकीकत



करेंट अफेयर्स

- हाल ही में 1998 बैच के अधिकारी कृष्ण कुमार टाकुर ने NMDC लिमिटेड में निदेशक (कार्मिक) का पदभार ग्रहण कर लिया है। NMDC भारत की सबसे बड़ी लौह अयस्क उत्पादक कंपनी है। उन्होंने भारतीय रेलवे कार्मिक सेवा के अधिकारी के रूप में अपनी सेवा शुरू की थी। उनके पास भारतीय रेलवे और सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रमों में मानव संसाधन प्रबंधन का दो दशकों से भी अधिक का अनुभव है।
- भारत जून 2026 से लिपुलेख दर्रा के माध्यम से चीन के साथ सीमा व्यापार फिर से शुरू करने जा रहा है। यह कदम 2020 में कोविड-19 महामारी के दौरान लगाए गए सात साल के प्रतिबंध को समाप्त करेगा। यह निर्णय विभिन्न मंत्रालयों की मंजूरी और महत्वपूर्ण कूटनीतिक बातों के बाद लिया गया है। उत्तराखंड के पिथौरागढ़ जिले में स्थित यह ऐतिहासिक व्यापार मार्ग लंबे समय से स्थानीय लोगों की आजीविका का आधार रहा है और इसके दोबारा खुलने से व्यापारियों को आर्थिक राहत मिलने की उम्मीद है।
- हाल ही में पाकिस्तान क्रिकेट टीम के ओपनर साहिबजान फरहान को फरवरी 2026 के लिए आईसीसी टेस्ट ट्वेंटी ट्वेंटी मध्य घोषित किया गया है। यह सम्मान उन्हें आईसीसी टेस्ट ट्वेंटी-20 विश्व कप 2026 में उनके शानदार प्रदर्शन के लिए मिला। फरहान ने पूरे टूर्नामेंट में बेहतरीन बल्लेबाजी करते हुए सबसे अधिक रन बनाए और इतिहास रच दिया। उन्होंने विराट कोहली का रिकॉर्ड तोड़ते हुए एक ही टी-20 वर्ल्ड कप संस्करण में सबसे ज्यादा रन बनाने का नया रिकॉर्ड बनाया।
- हाल ही में भारत ने वर्ल्ड पैरा एथलेटिक्स ग्रांप्री 2026 में शानदार प्रदर्शन करते हुए इतिहास रच दिया। नई दिल्ली में आयोजित इस प्रतियोगिता में भारत ने कुल 208 पदक जीतकर पदक तालिका में पहला स्थान हासिल किया। तीन दिन तक चले इस अंतरराष्ट्रीय आयोजन का आयोजन जवाहरलाल नेहरू स्टेडियम में किया गया, जिसमें आठ देशों के 257 एथलीटों ने भाग लिया। भारतीय पैरा एथलीटों ने टैक और फील्ड स्पर्धाओं में उत्कृष्ट प्रदर्शन करते हुए 75 स्वर्ण, 69 रजत और 64 कांस्य पदक जीते।

जॉब अलर्ट

- IDBI बैंक लिमिटेड**
 - पद का नाम: स्पेशलिस्ट ऑफिसर (डीजीएम, एजीएम, मैनेजर, जूनियर असिस्टेंट मैनेजर-सिक्वोरिटी ऑफिसर)
 - कुल पद: 33
 - योग्यता- आई/कंप्यूटर साइंस/इलेक्ट्रॉनिक्स/डेटा/एआई/रिलेटेड फील्ड में ग्रेजुएट/पोस्टग्रेजुएट डिग्री या XII/डिप्लोमा जैसीओ सर्विस (सिक्वोरिटी ऑफिसर के लिए) के साथ, तय एवबेसपीरियंस के साथ
 - आयु सीमा- 25 से 45 साल, सिक्वोरिटी ऑफिसर के लिए 50 साल तक, रिलैक्सेशन के साथ)
 - वेबसाइट- <https://www.idbibank.in>

- को-ऑपरेटिव बैंकिंग एंड टेक्निकल सर्विसेज परीक्षा**
 - पद का नाम: मैनेजर, जूनियर मैनेजर, असिस्टेंट कैशियर, असिस्टेंट/टाइपिस्ट, असिस्टेंट इंजीनियर (सिविल)
 - कुल पद- 116 पोस्ट
 - वेबसाइट- <https://upscib.org>

- IRB GD कांस्टेबल रिक्रूटमेंट**
 - पद का नाम- कांस्टेबल बैट, कांस्टेबल बगलर, कांस्टेबल, कांस्टेबल सिविल पुलिस (महिला), कांस्टेबल सिविल पुलिस (पुरुष), फायरमैन, स्पेशल टाइगर गार्ड
 - कुल पद- 984 (APST, UR और एक्स-सर्विसेमैन कोटा मिलाकर)
 - पे स्केल- पे मैट्रिकस लेवल-3 (21,700 - 69,100)
 - योग्यता- क्लास 10 वीं, (पोस्ट के हिसाब से तय फिजिकल स्टैंडर्ड और दूसरी एलिजिबिलिटी शर्तें)
 - आयु सीमा- 18-22 साल कांस्टेबल पोस्ट (पोस्ट कोड 5/26 से 9/26), फायरमैन और स्पेशल टाइगर गार्ड के लिए 18-32 साल (पोस्ट कोड 10/26 और 11/26), एपीएसटी और एक्स-सर्विसेमैन के लिए नियम के अनुसार ऊपरी उम्र में छूट
 - वेबसाइट- <https://apssb.nic.in>

- इसरो यूआरएससी**
 - पद का नाम: वैज्ञानिक/इंजीनियर 'एससी', वैज्ञानिक/इंजीनियर 'एसडी', चिकित्सा अधिकारी 'एससी'
 - कुल पद: 4
 - पे स्केल: पद के हिसाब से अलग-अलग स्केल
 - योग्यता: पदानुसार
 - आयु सीमा: 25-35 वर्ष
 - वेबसाइट- www.isro.gov.in & www.ursc.gov.in

स्टडी से लेकर ट्रेवल तक, अपनाएं ये स्मार्ट कोर्स

12 वीं के बाद करियर चुनाव केवल पारंपरिक ग्रेजुएशन तक सीमित नहीं रह गया है। आज के समय में कई ऐसे प्रोफेशनल और डिप्लोमा कोर्स मौजूद हैं, जो न सिर्फ बेहतर करियर के अवसर देते हैं, बल्कि अंतरराष्ट्रीय स्तर पर पहचान बनाने का रास्ता भी खोलते हैं। इन कोर्स के जरिए छात्रों को विदेश में ट्रेनिंग, सेमिनार, प्रोजेक्ट और यहां तक कि नौकरी के मौके भी मिल सकते हैं। यदि आप पढ़ाई के साथ-साथ दुनिया घूमने का सपना देखते हैं, तो सही कोर्स का चुनाव आपके भविष्य को नई दिशा दे सकता है। आइए जानते हैं ऐसे पांच प्रमुख कोर्स के बारे में, जो आपको वैश्विक मंच तक पहुंचा सकते हैं।



ज्ञानेंद्र कुमार दीक्षित असिस्टेंट प्रोफेसर, बीबीडी यूनिवर्सिटी, लखनऊ

एमबीए इन इंटरनेशनल रिलेशन

आज के दौर में एमबीए इन इंटरनेशनल रिलेशन तेजी से लोकप्रिय हो रहा है। यह कोर्स उन छात्रों के लिए उपयुक्त है, जिन्हें अंतरराष्ट्रीय राजनीति, वैश्विक व्यापार और कूटनीति में रुचि है। इसमें देशों के आपसी संबंध, अंतरराष्ट्रीय संगठन, विदेशी नीतियां और वैश्विक अर्थव्यवस्था जैसे विषय पढ़ाए जाते हैं। इस कोर्स की खासियत यह है कि पढ़ाई के दौरान छात्रों को इंटरनेशनल सेमिनार, एक्सचेंज प्रोग्राम और रिसर्च प्रोजेक्ट में भाग लेने का अवसर मिल सकता है। भारत में जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, जाधवपुर विश्वविद्यालय जैसे संस्थान इस क्षेत्र में बेहतरीन शिक्षा प्रदान करते हैं।

डिप्लोमा इन इंटरनेशनल रिलेशन

यदि कोई छात्र जल्दी इस क्षेत्र में प्रवेश करना चाहता है, तो डिप्लोमा इन इंटरनेशनल रिलेशन एक अच्छा विकल्प है। यह कोर्स सामान्यतः एक से दो वर्ष का होता है और इसमें वैश्विक राजनीति, अंतरराष्ट्रीय कानून और कूटनीति की बुनियादी जानकारी दी जाती है।

ट्रेवल एंड टूरिज्म मैनेजमेंट

अगर आपको घूमना-फिरना पसंद है और नई संस्कृतियों को जानने का शौक है, तो ट्रेवल एंड टूरिज्म मैनेजमेंट आपके लिए बेहतरीन विकल्प हो सकता है। इस कोर्स में टूर प्लानिंग, एयरलाइन ऑपरेशन, होटल मैनेजमेंट और इंटरनेशनल टूरिज्म जैसे विषय शामिल होते हैं। इस क्षेत्र में काम करने वाले लोगों को अक्सर विदेश यात्रा करनी पड़ती है, क्योंकि उन्हें अंतरराष्ट्रीय टूर पैकेज तैयार करने, वलाइंट्स से मिलने और विभिन्न देशों में सेवाएं समन्वित करने का काम करना होता है। कई कंपनियां अपने कर्मचारियों को विदेश में ट्रेनिंग और बिजनेस ट्रिप के लिए भी भेजती हैं, जिससे अनुभव और आय दोनों बढ़ते हैं।

फॉरेन ट्रेड एंड इंटरनेशनल बिजनेस

ग्लोबलाइजेशन के दौर में फॉरेन ट्रेड एंड इंटरनेशनल बिजनेस से जुड़े कोर्स की मांग तेजी से बढ़ रही है। इस कोर्स में इंपोर्ट-एक्सपोर्ट, अंतरराष्ट्रीय बाजार, फाइनेंस और ट्रेड पॉलिसी की जानकारी दी जाती है। इस क्षेत्र में कार्यरत प्रोफेशनल्स को ट्रेड फेयर, बिजनेस मीटिंग और मार्केट रिसर्च के लिए विदेश जाना पड़ सकता है। भारत में इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ फॉरेन ट्रेड (आईआईएफटी) इस क्षेत्र का प्रमुख संस्थान है। यहां से पढ़ाई करने के बाद छात्रों को बेहतरीन जॉब्स मिलते हैं और सैलरी पैकेज भी आकर्षक होता है।

यूपीएससी के जरिए इंडियन फॉरेन सर्विसेस

अगर आप सरकारी सेवा के माध्यम से विदेश में काम करना चाहते हैं, तो संघ लोकसेवा आयोग (यूपीएससी) की सिविल सेवा परीक्षा के जरिए भारतीय विदेश सेवा (आईएफएस) में शामिल हो सकते हैं। यह भारत की सबसे प्रतिष्ठित सेवाओं में से एक है। आईएफएस अधिकारी भारत का प्रतिनिधित्व विदेश में करते हैं और उन्हें विभिन्न देशों में दूतावासों में नियुक्त किया जाता है। हालांकि इसमें चयन के लिए कड़ी प्रतिस्पर्धा और उच्च रैंक आवश्यक होती है, लेकिन यह करियर सम्मान, अनुभव और अंतरराष्ट्रीय एक्सपोज़र का अनूठा अवसर प्रदान करता है।